[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 1610 **H**

Unique Paper Code : 12051202

Name of the Paper : Hindi kavita (Reetikaleen Kavya)

Name of the Course : **B.A. (Hon.) Hindi**

Semester : II (CBCS)

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. केशव की काव्य-कला का विवेचन कीजिए।

अथवा

नीति काव्य परंपरा में रहीम का स्थान निर्धारित कीजिए। (12)

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

P.T.O.

2. "यदि प्रबंध एक विस्तृत वनस्थली है तो मुक्तक एक चुना हुआ गुलदस्ता" इस कथन के आलोक में बिहारी के दोहों का मूल्यांकन कीजिए।

अथवा

"बिहारी ने अपने दोहों में गागर में सागर भरा है" इस कथन की सार्थकता सिद्ध कीजिए। (12)

3. घनानंद की कविता के भाव पक्ष का विश्लेषण कीजिए।

अथवा

घनानंद की प्रेम व्यंजना पर प्रकाश डालिए। (12)

4. भूषण की काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

अथवा

गिरधर कविराय के काव्य में व्यक्त आदर्शों की चर्चा कीजिए। (12)

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) रूपनिधान सुजान सखी जब तें इन नैननि नेकु निहारे।
दीठि थकी अनुराग-छकी मति लाज के साज-समाज बिसारे।
एक अचंभौ घनानंद हैं नित ही पल-पाट उघारे।
टारें टरैं नहीं तारे कहूँ सु लगे मनमोहन- मोह के तारे।।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

अथवा

बेद राखे बिदित पुरान परसिद्ध राखे राम-नाम राख्यो अति रसना सुघर में।

हिंदुन की चोटी रोटी राखी है सिपाहिन की काँधे में जनेऊ राख्यो मात्रा राखी गर में।

मीड़ि राखे मुगल मरोड़ राखे पातसाह बैरी पीसि राखे बरदान राख्यो कर में।

राजन की हद्द राखी तेगबल सिवराज देव राखे देवल स्वधर्म राख्यो घर में।

(ख) साई बैर न कीजिए, गुरु, पंडित, कवि, यार
बेटा, बनिता, पँवरिया, यज्ञ करावन हार
यज्ञ करावन हार, राजमंत्री हो होई
विप्र, परोसी, वैद, आपको तपै रसोई
कह गिरिधर कविराय, युगन ते यह चलि आई
इन तेरह सों तरह दिए, बनि आवै साईं

अथवा

रहिमन अँसुआ नैन ढरि जिय दुःख प्रकट करेइ।
जाहि निकारो गेह ते कस न भेद कहि देइ ।।
रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो छिटकाय।
टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय ।। (8+7=15)

P.T.O.

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

6. दिए गए निर्देशों के आधार पर किन्हीं दो का रचना कौशल उद्घाटित कीजिए :

(क) चरण धरत चिंता करत, नींद न भावत शोर।
सुबरण को सोधत फिरत, कबि व्यभिचारी चोर।। (काव्य कौशल)

(ख) जटिल नीलमनि जगमगति सींक सुहाई नाँक।
मनो अली चंपक-कली बसि रसु लेतु निसाँक।।
मिली चंदन-बेंदी रही गोरै मुँह, न लखाइ।
ज्यौं-ज्यों मद-लाली चढ़े, त्यौं-त्यौं उघरति जाइ।
(रूप वर्णन)

(ग) काज परै कछु और है काज सरै कछु और।
रहिमन भँवरी के भए नदी सिरावत मौर।।
(सामाजिक परंपरा का वर्णन)

(घ) रावरे रूप की रीति अनूप नयो नयो लागत ज्यौ ज्यौं निहारियै।
त्यौं इन आँखिन बानि अनोखी अघानि कहूँ नहिं आन तिहारियै।।
एक ही जीवन हुतौ सु तौ बार्यो सुजान सकोच और सोच सहारियै।
रोकी रहै न दुई घनआनँद बावरी रीझ के हाथनि हारियै।।
(प्रेम के स्वरूप का वर्णन)
(6+6=12)

(1500)

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

H

Sr. No. of Question Paper : 1388

Unique Paper Code : 12051401

Name of the Paper : Bhartiya Kavyashastra
(भारतीय काव्यशास्त्र)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi (LOCF)**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. भारतीय साहित्यशास्त्र की परंपरा का संक्षिप्त उल्लेख करते हुए आचार्य वामन के योगदान पर विचार कीजिए। (12)

अथवा

भारतीय काव्यशास्त्र के आचार्यों द्वारा प्रस्तुत काव्य हेतुओं को स्पष्ट कीजिए।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

P.T.O.

2. रस को परिभाषित करते हुए रस के अंगों पर प्रकाश ड़ालिए। (12)

अथवा

लक्षणा शब्द शक्ति को उदाहरण सहित समझाइए।

3. मुक्तक **अथवा** प्रबंध काव्य की तात्विकता को स्पष्ट कीजिए। (12)

4. (क) किन्हीं **तीन** अलंकारों के लक्षण-उदाहरण सहित लिखिए। (3×3=9)

श्लेष, अनुप्रास, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, विरोधाभास

(ख) किन्हीं **तीन** छंदों के लक्षण उदाहरण दीजिए :- (3×3=9)

बरवै, दोहा, उल्लाला, छप्पय, घनाक्षरी, भुजंगप्रयात

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (7×3=21)

(क) ओज गुण

(ख) वीर रस

(ग) दो काव्य दोषों का वर्णन

(घ) वात्सल्य रस

(ङ) अभिधा शब्द शक्ति

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

[This question paper contains 8 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 1455 **H**

Unique Paper Code : 12051402

Name of the Paper : हिन्दी कविता (छायावाद के बाद)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : IV

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (7.5×2=15)

(क) यह वह विश्वास, नहीं जो अपनी लघुता में भी काँपा,

वह पीड़ा, जिस की गहराई को स्वयं उसी ने नापा,

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

कुत्सा, अपमान, अवज्ञा के धुँधुआते कड़वे तम में

यह सदा-द्रवित, चिर-जागरूक, अनुरक्त-नेत्र,

उल्लम्ब-बाह, यह चिर-अखंड अपनापा

जिज्ञासु, प्रबुद्ध, सदा श्रद्धामय

इस को भक्ति को दे दो।

अथवा

जी नहीं दिल्लगी की इस में क्या बात,

मैं लिखता ही तो रहता हूँ दिन-रात,

तो तरह-तरह के बन जाते हैं गीत,

जी रूठ-रूठ कर मन जाते है गीत,

जी बहुत ढेर लग गया हटाता हूँ,

गाहक की मर्जी, अच्छा, जाता हूँ,

मैं बिलकुल अंतिम और दिखाता हूँ,

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

या भीतर जा कर पूछ आइए, आप,

है गीत बेचना वैसे बिलकुल पाप

क्या करूँ मगर लाचार हार कर

गीत बेचता हूँ।

(ख) कहाँ तो तय था चराग़ाँ हरेक घर के लिए,

कहाँ चराग मयस्सर नहीं शहर के लिए।

यहाँ दरख़्तों के साए में धूप लगती है,

चलें यहाँ से चलें और उम्र भर के लिए।

न हो कमीज तो पाँव से पेट ढक लेंगे,

ये लोग कितने मुनासिब हैं इस सफर के लिए।

खुदा नहीं न सही आदमी का ख़्वाब सही,

कोई हसीन नज़ारा तो है नज़र के लिए।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

अथवा

उसके बाद सर्दियाँ आ जायेंगी

और मैंने देखा है कि सर्दियाँ जब भी आती हैं

तो माँ थोड़ा और झुक जाती है

अपनी परछाई की तरफ

उन के बारे में उसके विचार

बहुत सख्त है

मृत्यु के बारे में बेहद कोमल

पक्षियों के बारे में

वह कभी कुछ नहीं कहती

हालाँकि नींद में

वह खुद एक पक्षी की तरह लगती है।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

2. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं दो का रचना-कौशल की दृष्टि से विश्लेषण कीजिए : (7.5×2=15)

(क) प्राइवेट बस का ड्राइवर है तो क्या हुआ,

सात साल की बच्ची का पिता तो है!

सामने गियर से उपर

हुक से लटका रक्खी हैं

काँच की चार चूड़ियाँ गुलाबी

बस की रफ़्तार के मुताबिक़

हिलती रहती हैं.....

झुककर मैंने पूछ लिया

खा गया मानो झटका

अधेड़ उम्र का मुच्छड़ रोबीला चेहरा

आहिस्ते से बोला: हाँ सा'ब

लाख कहता हूँ नहीं मानती मुनिया। (मूल-संवेदना)

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

(ख) यहाँ तरह-तरह के जूते आते हैं

और आदमी की अलग-अलग 'नवैयत'

बतलाते हैं

सबकी अपनी-अपनी शक्ल है

अपनी-अपनी शैली है

मसलन एक जूता है:

जूता क्या है-चकतियों की थैली है

इसे एक चेहरा पहनता है

जिसे चेचक ने चुग लिया है

उस पर उम्मीद को तरह देती हुई हँसी है।

(काव्य-सौंदर्य)

(ग) हत्या में जो चीज सबसे पहले मरती है

वह कविता की सबसे जरूरी पंक्ति हैं

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

अच्छी आदतें अक्सर बहुत डरपोक होती हैं

और अक्सर अपने बिल खोदकर रखती हैं

अच्छी आदतें कई बार जिद बन जाती हैं

और ऐसे लोगों को अव्यावहारिक

माना जाता है कामकाजी समाज में। (काव्य–बिंब)

3. अज्ञेय के काव्य की शिल्पगत विशेषताओं का विवेचन कीजिए।

अथवा

'उनको प्रणाम' कविता का प्रतिपाद्य लिखिए। (15)

4. दुष्यंत कुमार के काव्य शिल्प पर विचार कीजिए।

अथवा

"रघुवीर सहाय साठोत्तरी कविता के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं।" सोदाहरण लिखिए। (15)

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

5. 'पानी की प्रार्थना' कविता की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।

अथवा

राजेश जोशी की काव्यगत विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

(15)

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

(2000)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 1762 **H**

Unique Paper Code : 12051403

Name of the Paper : हिन्दी उपन्यास

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi**

Semester : IV

समय : 3 घण्टे

पूर्णांक : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

1. सप्रसंग व्याख्या करें : (7+8=15)

(क) "पापा ने इस बार उसे चिट्ठी लिखने को कहा था। पर उसने नहीं लिखी। लिखना तो खूब अच्छी तरह जानता है, लिख भी सकता है। पर तब वह सारी बातें समझता कहाँ था? तब तो उसे यह भी नहीं मालूम था कि मम्भी-पापा में पक्कीवाली कुट्टी

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

हो गई है। पर अब कैसे लिख सकता है भला! वह पूरी तरह मम्मी की तरफ है और मम्मी से उनकी कुट्टी है तो फिर बंटी से भी है। ऐसा ही तो होता है"।

अथवा

"उन्माद और ज्ञान में जो भेद है, वही वासना और प्रेम में है। उन्माद अस्थायी होता है और ज्ञान स्थायी। कुछ क्षणों के लिए ज्ञान का लोप हो सकता है, पर वह मिटता नहीं। जब पागलपन का प्रहार होता है, ज्ञान लोप होता हुआ विदित होता है; पर उन्माद बीत जाने के बाद ही ज्ञान स्पष्ट हो जाता है। यदि ज्ञान अमर नहीं है, तो प्रेम भी अमर नहीं है, पर मेरे मत में ज्ञान अमर है- ईश्वर का एक अंश है और साथ ही प्रेम भी"।

(ख) "आनंद के अवसर पर हम अपने दुखों को भूल जाते हैं। हाफ़िज़ जी को सलीम के सिविल-सार्विस से अलग होने का, समरकान्त को नैना की मृत्यु का और सेठ धनिराम को पत्र-शोक का रंज कम न था, पर इस समय सभी प्रसन्न थे। किसी संग्राम में विजय पाने के बाद योद्धागण मरनेवालों के नाम को रोने नहीं बैठते। उस वक्त तो सभी उत्सव मनाते हैं। शादियाने बजते हैं, महफिलें जमती हैं, बधाइयाँ दी जाती हैं। रोने के लिए हम एकांत ढूंढते हैं, हँसने के लिए अनेकांत"।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

अथवा

कुमारगिरी चित्रलेखा को समझ न सके। चित्रलेखा में एक असाधारण व्यक्तित्व था। और वह व्यक्तित्व कितना प्रभावशाली था! कुमारगिरि के हृदय में एक बार फिर यह विचार आया कि वे चित्रलेखा को दीक्षा देने से इंकार कर दें। उन्होने चित्रलेखा से कहना आरंभ कर दिया "देवी चित्रलेखा! मैं तुम्हें समझने में असमर्थ हूँ। तुम्हारा व्यक्तित्व मेरे व्यक्तित्व से नीचा नहीं है। इसलिए दीक्षा देना मेरा कहाँ तक उचित होगा, इसका निर्णय करना होगा। जब तक मैं इसका निर्णया न कर लूँ..."।

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** उपन्यासकारों पर टिप्पणी लिखें : (7+8=15)

(क) मैत्रेयी पुष्पा

(ख) जैनेन्द्र

(ग) अज्ञेय

(घ) प्रेमचंद

3. 'कर्मभूमि' उपन्यास में वर्णित विभिन्न समस्याओं पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

'कर्मभूमि' उपन्यास राष्ट्रीय आंदोलन के मूल्यों से प्रेरित है'- इस कथन की युक्ति-संगत व्याख्या कीजिये।

4. 'चित्रलेखा' उपन्यास में चित्रित जीवन-दर्शन पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

कथावस्तु की दृष्टि से 'चित्रलेखा'! उपन्यास का मूल्यांकन कीजिए।

5. 'आपका बंटी' एक दरकते परिवार का आईना है, कथन के आधार पर उपन्यास में वर्णित समस्याओं पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

'आपका बंटी' उपन्यास की शिल्पगत विशेषताएँ स्पष्ट कीजिये।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

[This question paper contains 8 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 1362 **H**

Unique Paper Code : 12051601

Name of the Paper : हिंदी आलोचना

Name of the Course : **BA (H) HINDI – CBCS**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित गदयांशों की सप्रसंग व्याख्या करें : (10×3)

(क) कर्म सौन्दर्य के जिस स्वरूप पर मुग्ध होना मनुष्य के लिए स्वाभाविक हैं और जिसका विधान कवि परंपरा बराबर करती चली

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

आ रही है, उसके प्रति उपेक्षा प्रकट करने और कर्म सोन्दर्य के एक दूसरे पक्ष में ही केवल प्रेम और भ्रातृत्व भाव के प्रदर्शन और आचरण में ही - काव्य का उत्कर्ष मानने का जो एक नया फैशन टालस्टाय के समय से चला है, वह एकदेशीय है. दीन और असहाय जनता को निरंतर पीड़ा पहुंचाते चले जाने वाले क्रूर आततायियों को उपदेश देने, उनसे दया की भिक्षा मांगने और प्रेम जताने तथा उनकी सेवा-शुश्रूषा करने में ही कर्त्तव्य की सीमा नहीं मानी जा सकती, कर्म क्षेत्र का एक मात्र सौन्दर्य नहीं कहा जा सकता. मनुष्य के शरीर के जैसे दक्षिण और वाम दो पक्ष हैं, वैसे ही उसके हृदय के भी कोमल और कठोर, मधुर और तीक्ष्ण, दो पक्ष हैं और बराबर रहेंगे। काव्य कला की पूरी रमणीयता इन दोनों पक्षों के समन्वय के बीच मंगल या सौन्दर्य के विकास में दिखाई पड़ती है।

अथवा

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

मैं और चीजों की तरह कला को भी उपयोगिता की तुला पर तौलता हूँ। निसंदेह कला का उद्देश्य सौन्दर्य-वृति की पुष्टि करना है और वह हमारे आध्यात्मिक आनंद की कुंजी है; पर ऐसा कोई रुचिगत मानसिक तथा आध्यात्मिक आनंद नहीं, जो अपनी उपयोगिता का पहलू न रखता हो। आनंद स्वत: एक उपयोगिता-युक्त वस्तु है और उपयोगिता की दृष्टि से एक ही वस्तु से हमें सुख भी होता है और दु:ख भी. आसमान पर छाई लालिमा निसन्देह बड़ा सुन्दर दृश्य है; परन्तु आषाढ़ में अगर आकाश पर वैसी लालिमा छा जाये, तो वह हमें प्रसन्नता देने वाली नहीं हो सकती. इस समय तो हम आसमान पर काली--काली घटाएं देखकर ही आनंदित होते हैं।

(ख) सभ्यता के विकास के साथ-साथ हमारी अनुभूतियों का क्षेत्र भी विकसित होता गया है और अनुभूतियों को व्यक्त करने के हमारे

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

1362

उपकरण भी विकसित होते गए हैं। यह कहा जा सकता है कि हमारे मूल राग-विराग नहीं बदले - प्रेम अब भी प्रेम है और घृणा अब भी घृणा, यह साधारणतया स्वीकार किया जा सकता है। पर यह भी ध्यान में रखना होगा कि राग वही रहने पर भी रागात्मक संबंधों की प्रणालियों बदल गयी हैं; और कवि का क्षेत्र रागात्मक संबंधों का क्षेत्र होने के कारण इस परिवर्तन का कवि-कर्म पर बहुत गहरा असर पड़ा है।

अथवा

अभिव्यक्ति का संघर्ष दीर्घ होता है। कला का यह तीसरा क्षण दीर्घ होता हैं। उस संघर्ष में अभ्व्यक्ति के स्तर तक आते-आते, हमारे मनोमय तत्व-रुप बदलने लगते हैं। होता यह है कि उस संघर्ष के दौरान भाषा के भीतर अवस्थित ज्ञान परंपरा और भाव परंपरा के कारण, जो पहले से ही शब्द संयोग बने हुए हैं, उन

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

शब्द संयोगों के साथ अनिवार्य रूप से जुड़े हुए जो अर्थानुषंग हैं, उन अर्थानुषंगों के प्रभाव में आकर, समशील-समरूप अर्थानुषंगों को आत्मसात कर, मनोमय रूप तत्व अपने को और पुष्ट करते हैं.

(ग) साधारण, रोजमर्रा की घटनाओं के महीन सूत्रों द्वारा कुछ गंभीर सत्यों को उद्घाटित करना, उनके माध्यम से पात्रों की आकांक्षाओं और असंगतियों को अभिव्यक्त करना सचमुच एक कठिन समस्या है। हमेशा यह खतरा बना रहता है कि कहीं लेखक अपनी निरपेक्ष दृष्टि से च्युत होकर एक स्थूल, इतिवृत्तात्मक दृष्टिकोण न अपना ले। यह केवल हवाई खतरा नहीं है. पिछले वर्षों में हिंदी उपन्यास का दुर्भाग्य ही यह रहा है कि लेखक अपने को सोशिलाजिस्ट पहले समझता है - कलाकार बाद में। फिर चाहे उपर्युक्त दृष्टिकोण प्रच्छन्न रूप में मनोवैज्ञानिक अंतर्दवंद्वों द्वारा प्रदर्शित हो (नदी के द्वीप) या सामाजिक विषमताओं के सम्बन्ध में लम्बी सैद्धांतिक बहसों के रूप में (बूंद और समुद्र, जयवर्धन)।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

यह एक अजीब काम्प्लेक्स है जिससे न्यूनाधिक मात्रा में हर लेखक पीड़ित दिखाई पड़ता है।

अथवा

कहानी के भावात्मक स्तर से तात्पर्य बोध के स्तर से ही ह। इसलिए इस बोध-स्तर पर थोड़े विस्तार में विचार करने की आवश्यकता ह। मैंने भावुकता का उपचार लेकर लिखी गयी कहानी और बोध-स्तर पर भावना का मर्म लेकर खुलने वाली कहानी में जो भेद किया है उसके कुछ निश्चित आधार हैं. सबसे पहला कारण कथानक के भावात्मक तत्वों के भेद के कारण सिद्ध होता ह। भावुक कहानी की कथा मानवीय संवेदना को कृत्रिम परिस्थितियों के योग से उभारने की चेष्टा करती है, फलतः उसमें वह प्रतीक ध्वनि नहीं होता जो पाठक की संवेदना के केंद्र में अपने को स्थिर कर दे। भावुक कहानियों में घटनाएँ -

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

और उन घटनाओं के प्रति पात्रों की तात्कालिक प्रतिक्रिया ही कहानी का केन्द्रीय आधार बन जाती है।

2. शुक्ल पूर्व युग की हिंदी आलोचना पर एक निबंध लिखें। (15)

अथवा

द्विवेदी युगीन आलोचना की प्रमुख प्रवृत्तियों का वर्णन करें।

3. रामविलास शर्मा के आलोचनात्मक योगदान का मूल्यांकन करें। (15)

अथवा

हजारी प्रसाद द्विवेदी की आलोचना के महत्त्व का प्रतिपादन करें।

4. नामवर सिंह की आलोचना-शैली की विशेषताएं लिखिए। (15)

अथवा

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

1362

8

'सन्दर्भ की खोज' शीर्षक पाठ का प्रतिपाद्य लिखिए।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

(5000)

[This question paper contains 4 printed pages.]

आपका अनुक्रमांक.....

Sr. No. of Question Paper : 1411 **H**

Unique Paper Code : 12051602

Name of the Paper : **हिन्दी निबंध और अन्य गद्य विधाएँ**

Name of the Course : **B.A. (H) HINDI**

Semester : VI

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (8+7=15)

(क) मजदूरी करने से हृदय पवित्र होता है; संकल्प दिव्य लोकांतर में विचरते हैं। हाथ की मजदूरी ही से सच्चे ऐश्वर्य की उन्नति होती है। जापान में मैंने कन्याओं और स्त्रियों को ऐसी कलावती देखा है कि वे रेशम के छोटे-छोटे टुकड़ों को अपनी जानकारी की बदौलत हजारों की कीमत का बना देती हैं, नाना प्रकार

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

के प्राकृतिक पदार्थों और दृश्यों को अपनी सुई से कपड़े के ऊपर अंकित कर देती है। जापान निवासी कागज, लकड़ी और पत्थर की बड़ी अच्छी मूर्तियाँ बनाते हैं।

अथवा

मैंने तीन तरफ से हिंदू-मुस्लिम का संधान पाया है। एक मार्ग संत और विद्धज्जनों का रहा है। हिंदू और मुस्लिम जनता वस्तुतः उच्चतर अर्थ में एक ही धर्म का पालन करती है-इस विषय पर फारसी में कुछ पुस्तकें लिखी गई थीं। एक 'मज्म-अ-उलबहरन' दाराशिकोह की लिखी है। इसका अंग्रेजी में भाषान्ततर मैंने देखा है। पुस्तक में हिंदू-मुस्लिम धर्मों का सम्मिलन कराने का प्रयास है। हिंदी में भी ऐसी पुस्तकें लिखी गई हैं। ऐसी पुस्तकें भी बहुत हैं जिनमें कुरान और गीता तथा वेद और कुरान के भक्तिमय आवेग वाले पद्यों में भी समानता खोजी गई है। यह एक तरह का प्रयास है, परंतु मुझे इसमें सफलता मिलती नहीं दिखायी दी। वस्तुतः प्रत्येक हिंदू और प्रत्येक मुसलमान जानता है कि उच्चतर आध्यात्मिक क्षेत्र में कहीं मतद्वैष नहीं है।

(ख) समाज तथा सामाजिक व्यक्ति सापेक्ष शब्द है, कारण, सामाजिक प्राणी के विकास के लिए समाज का आविर्भाव हुआ है तथा समाज के विकास के लिए व्यक्ति को अधिकार एवं सुविधाएँ प्राप्त हुई हैं। नागरिक शब्द केवल अपने शब्दिक अर्थ में प्रयुक्त न होकर इतना व्यापक हो गया है कि उससे केवल नागर निवासी

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

का बोध न होकर न्याय और कानून-सम्बंधी अनेक अधिकार एवं सामाजिक उत्तरदायित्व से युक्त व्यक्ति का ज्ञान होता है। व्यक्ति सामूहिक विकास को दृष्टि में रखते हुए शासित भी होता है और शासन में हस्तक्षेप तथा परिवर्तन करने का अधिकरी भी।

अथवा

जिन कितने देवताओं की मनौती के बाद माँ ने मुझे याद किया था, उनमें एक हुसैन साहब भी थे। नौ साल की उम्र तक, जब तक जनेऊ नहीं हो गई थी, मुहर्रम के दिन मुसलमान बच्चों की तरह मुझे भी ताजिए को चारों ओर रंगीन छड़ी लेकर कूदना पड़ा है और गले में गंडे पहनने पड़े हैं मुहर्रम उन दिनों मेरे लिए कितनी खुशी का दिन था। नए कपड़े पहनता, उछलता-कूदता, नए-नए चेहरे और तरह-तरह के खेल देखता-धूम-धक्कड़ में किस तरह चार पहर गुजर जाते! ठस मुहर्रम के पीछे जो रोमांचकारी, हृदय को पिघलाने वाली, करुण रस से भरी दर्दअंगेज घटना छिपी है, उन दिनों उसकी खबर भी कहाँ थी!

2. मेले का ऊँट, निबंध में नीहित व्यंग्य की सोदाहरण विवेचना कीजिए। (15)

अथवा

मजदूरी और प्रेम निबन्ध का उद्देश्य लिखिए।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

3. भारतवर्ष की सांस्कृतिक समस्या निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए। (15)

अथवा

'अपनी खबर' में निहित बेचन शर्मा उग्र के जीवन संघर्ष का वर्णन कीजिए।

4. सुभान खाँ के चरित्र की विशेषताएँ लिखिए। (15)

अथवा

"वैण्णन की फिसलन एक महत्त्वपूर्ण व्यंग्य है" कथन की समीक्षा कीजिए।

5. 'जातियों का अनूठापन' निबन्ध का प्रतिपाद्य लिखिए। (15)

अथवा

'निराला की साहित्य साधना' में संकलित 'नये संघर्ष' का सार अपने शब्दों में लिखिए।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 5142 **H**

Unique Paper Code : 2052101201

Name of the Paper : हिंदी कविता : सगुण भक्तिकाव्य एवं रीतिकालीन काव्य

Name of the Course : बी.ए. (विशेष) हिंदी : DSC

Semester : II

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्न पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिये : (3×9=27)

(क) लछिमन बान सरासन आनू। सोषौं बारिधि बिसिख कृसानू।।
सठ सन बिनय कुटिल सन प्रीती। सहज कृपन सन सुंदर नीती।।
ममता रत सन ग्यान कहानी। अति लोभी सन बिरति बखानी।।
क्रोधिहिं सम कामिहि हरिकथा। ऊसर बीज बएँ फल जथा।।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

P.T.O.

5142

अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा। यह मत लछिमन के मन भावा।।
सन्धानेउ प्रभु बिसिख कराला। उठी उदधि उर अंतर ज्वाला।।

अथवा

कौन हौ कित तें चले कित जात हौ केही काम जू।
कौन की दुहिता बहू कहि कौन की यह बाम जू।
एक गाँउ रहौकि साजन मित्र बन्धु बखानियै।
देस के परदेस के किधौं पंथ की पहिचानियै।

(ख) आए जोग सिखावन पाँडे
परमारथी पुराननि लादे ज्यौं बनजारे तां ठाँड़े।।
हमरी गति पति कमलनयन की जोग सिखें तै राँड़े।
कहौ मधुप, कैसे समायेंगे एक म्यान दो खाड़े।
कहु षटपद, कैसे खैयतु है हाथिन के संग गाँड़े।
काकी भूख गयी बयारि भखि बिना दूध घृत माँड़े।
काहे जो झाला लै मिलवत, कौन चोर तुम डाड़े।

अथवा

धाम धरीक निवारिये, कलित ललित अलि-पुंज।
जमुना तीन तमाल-तरु-मिलित मालती-कुञ्ज।।
मिली चन्दन-बेंदी रही गौरें मुंह, न लखाई।
ज्यौं ज्यौं मद-लाली चढ़ै, त्यौं त्यौं उधरति जाइ।।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

(ग) मीत सुजान अनीति करौ जिन, हा हा न हूजिये मोहि अमोही।
दीठि कौं और कहूं नहिं ठौर, फिरी दृग रावरे रूप की दोही।
एक बिसास की टेक गहे लगि आस रहे बसि प्रान - बटोही।
हौं घनानंद जीवन मूल दई। कित प्यासनि मारत मोही।

अथवा

राजत अखंड तेज छाजत सुजस बड़ो गाजत गयंद दिग्गजन हिय साल को।

जाहि के प्रताप सों मलीन आफताब होत ताप तजि दुजन करत बहु ख्याल को।

साज सजि गज तुरी पैदर कतार दीन्हें भूषण भनत ऐसो दीन प्रतिपाल को।

आन रावराजा एक मन में न लाऊँ अब साहू को सराहौं कै सराहौं छत्रसाल को।

2. 'रामचरित मानस' के सुन्दरकाण्ड की उपादेयता पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

केशव दास की 'रामचंद्रिका' में चित्रित वन गमन प्रसंग का सौन्दर्य वर्णन कीजिए।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

3. सूरदास के पदों के आधार पर गोपियों की विरह भावना का मूल्यांकन कीजिये। (15)

अथवा

बिहारी के काव्य में चित्रित श्रृंगार चेतना को अपने शब्दों में लिखिए।

4. "भूषण रीतिकाल के वीर रस के कवि हैं" इस कथन की तर्क-संगत समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

'घनानंद प्रेम की पीर के सच्चे साधक हैं' - इस कथन की पुष्टि कीजिए।

5. संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए (कोई दो) (2×9=18)

(क) सुन्दरकाण्ड का काव्यत्व

(ख) सूरदास के पदों का काव्य-सौन्दर्य

(ग) बिहारी के काव्य में सूक्ष्मता

(घ) केशवदास की 'रामचंद्रिका' में राम कथा वर्णन

(ङ) भूषण के नायक

(च) घनानंद की काव्य-भाषा

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 5193 **H**

Unique Paper Code : 2052101202

Name of the Paper : हिंदी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi (DSC)**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

1. मध्यकालीन बोध और आधुनिक बोध पर तर्कपूर्ण विचार कीजिए। (18)

अथवा

स्वाधीनता आंदोलन के परिप्रेक्ष्य में द्विवेदी युगीन साहित्य का विवेचन कीजिए।

P.T.O.

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

2. हिंदी कहानी के विकास को रेखांकित कीजिए। (18)

अथवा

हिंदी आलोचना के विकास में आचार्य रामचंद्र शुक्ल की भूमिका पर प्रकाश डालिए।

3. प्रगतिवाद की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए। (18)

अथवा

'नयी कविता नयी मनःस्थितियों की कविता है' इस कथन के परिप्रेक्ष्य में विचार कीजिए।

4. हिंदी की स्वातंत्र्योत्तर साहित्यिक पत्रकारिता की वस्तुस्थिति का मूल्यांकन कीजिए। (18)

अथवा

हिंदी के अस्मितामूलक विमर्श के महत्व का निरूपण कीजिए।

5. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए – (9+9)

(क) हिंदी खड़ी बोली का विकास

(ख) भारतेन्दु युगीन हिंदी नाटक

(ग) उत्तर छायावाद

(घ) नवगीत

(ङ) दलित विमर्श

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 5243 **H**

Unique Paper Code : 2052101203

Name of the Paper : Hindi Nibandh Evam Anya Gadya Vidhaein

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – DSC**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. किन्हीं **दो** गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10+10=20)

(क) जब हम किसी एक जाति पर ध्यान देते हैं तो निश्चय उस जाति के आचरणों से कुछ ऐसी बातें लक्षित होती है जो खास उसी जाति में पाई जाएगी और वे बातें ऐसी न होंगी जो मनुष्य मात्र

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

में साधारण रीति पर पाई जायें क्योंकि न कोई जाति इतनी भली है कि उसमें कोई बुरे होंगे ही नहीं। न देश का देश इतना बुरा हो सकता है कि उस जाति में एक भी भला ना हों।

अथवा

मुसलमानों के आने के पहले इस देश में नाना विश्वासों और आचार-विचारों के भेद से नाना प्रकार के धर्म-मत प्रचलित थे। परन्तु जीवन के प्रति उनकी दृष्टि में एक विशेष प्रकार की एकरूपता थी। इस एकरूपता के कारण ही नाना मतों के मानने वाले, नाना स्तरों पर खड़े हुए, नाना मार्यादाओं में बँधे हुए अनेक जनवर्ग एक सामान्य नाम से पुकारे जाने लगे। यह नाम था 'हिन्दू'।

(ख) एक दरबारी ने कहा, 'हुजूर वह हमें नहीं दिखेगा। सुना है, वह बहुत बारीक होता है। हमारी आँखें आपकी विराटता देखने की इतनी आदि हो गई हैं कि बारीक चीज नहीं दिखती। हमें भ्रष्टाचार दिखा भी तो उसमें हमें आपकी ही छवि दिखेगी, क्योंकि हमारी आँखों में तो आपकी ही सूरत बसी है। पर अपने राज्य में एक जाति रहती है जिसे 'विशेषज्ञ' कहते है। इस जाति के पास कुछ ऐसा अंजन होता है कि उसे आँखों में झाँककर वे बारीक चीज भी देख लेते हैं।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

अथवा

अपनी जिन्दगी को धोती-कुर्ते-चप्पल में घुट गई। किसी हिंदी के कवि की यह विदेशियों-सी चुस्ती और फुर्ती पलकों में अँट नहीं रही थी। तैराकी का शौक मुझे भी है, एक बार इसी नर्मदा के धुआँधार जलप्रपात में शहीद होते-होते रह गया था। तैर तैर का देर तक की लाल-लीला का स्फार संभार चला। पहाड़ और नदी दोनों ने दो ही दिनों में अज्ञेय की ऊँचाई और गहराई दिखा दी थी।

2. 'आचरण की सभ्यता' निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए। (15)

अथवा

'जातियों का अनूठापन' निबंध की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।

3. 'भारतवर्ष की सांस्कृतिक समस्या' का सार लिखिए। (15)

अथवा

'करुणा' निबंध का सार लिखिए।

4. 'नए संघर्ष' के आधार पर निराला के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए। (15)

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

अथवा

'सदाचार का ताबीज' में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

5. अज्ञेय के साथ का प्रतिपाद्य लिखिए। (15)

अथवा

'अथातो घुमक्कड़ जिज्ञासा' का मूल्यांकन कीजिए।

6. किसी एक पर टिपपणी लिखिए : (10)

(क) रामचन्द्र शुक्ल का साहित्यिक परिचय

(ख) जातियों का अनूठापन का सार

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

[This question paper contains 2 printed pages.]

आपका अनुक्रमांक.....

Sr. No. of Question Paper : 5113 **H**

Unique Paper Code : 2052102401

Name of the Paper : Bhartiya Kavyashastra

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi – DSC**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न–पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. भारतीय काव्यशास्त्र की परंपरा का संक्षिप्त उल्लेख करते हुए आचार्य वामन के योगदान को लिखिए। (15)

अथवा

भारतीय काव्यशास्त्र में औचित्य संप्रदाय का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

2. काव्य हेतु किसे कहते है? संस्कृत आचार्यों द्वारा प्रतिपादित काव्य हेतुओं का वर्णन कीजिए। (15)

अथवा

P.T.O.

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

काव्य लक्षण क्या हैं? काव्य लक्षणों को उदाहरण सहित समझाइये।

3. रस को परिभाषित करते हुए वीर और शांत रस को उदाहरण सहित समझाइये। (15)

अथवा

विभिन्न विद्वानों के मतों को विश्लेषित करते हुए रस निष्पत्ति की अवधारणा को समझाइये।

4. व्यंजना शब्दशक्ति को उदाहरण सहित समझाइये। (15)

अथवा

शब्द अलंकार और अर्थ अलंकार के भेद को उदाहरण सहित समझाइये।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए। (10×3=30)

(क) सवैया और छप्पय छंद

(ख) रूपक और उत्प्रेक्षा अलंकार

(ग) काव्य प्रयोजन

(घ) वीभत्स रस

(ङ) लक्षणा शब्द शक्ति

(च) पंडितराज जगन्नाथ

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

[This question paper contains 4 printed pages.]

आपका अनुक्रमांक.....

Sr. No. of Question Paper : 5170 **H**

Unique Paper Codo : 2052102402

Name of the Paper : Aadhunik Hindi Kavita (Chhayawad Tak)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – DSC**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×3=30)

(क) सब गुरु जन को बुरो बतावै।
अपनी खिचड़ी अलग पकावै।।
भीतर तत्व न झूठी तेजी।
क्यों सखि सज्जन नहिं 'अँगरेज'।।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

अथवा

अब तो विषय की ओर से मन की सुरति को फेर दो,
जिस ओर गति हो समय की उस ओर मति को फेर दो।
गाया बहुत-कुछ राग तुमने योग और वियोग का,
संचार कर दो अब यहाँ उत्साह का, उद्योग का।।

(ख) वन, उपवन, गिरी, सानु कुंज में मेघ बरस पड़ते हैं।
मेरा आत्म-प्रलय होता है, नयन नीर झड़ते हैं।
पढ़ो लहर, तट, तृण, तरु गिरि, नभ, किरन, जलद पर प्यारी।
लिखी हुई यह मधुर कहानी विश्व-विमोहन हारी।

अथवा

वसुधा पर ओस बने बिखरे
हिमकन आँसू जो क्षोभ भरे
उषा बटोरती अरुण गात !
अब जागो जीवन के प्रभात !

(ग) "दिये हैं मैंने जगत को फूल-फल,
किया है अपनी प्रतिभा से चकित-चल;
पर अनश्वर था सकल पल्लवित पल -
ठाठ जीवन का वही - जो ढह गया है।"

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

अथवा

वीरों का कैसा हो वसंत?

आ रही हिमाचल से पुकार,

है उदधि गरजता बार-बार,

प्राची, पश्चिम, भू, नभ अपार,

सब पूछ रहे हैं दिग-दिगंत,

वीरों का कैसा हो वसंत?

2. 'नए ज़माने की मुकरी' में भारतेन्दु को जीवन-यथार्थ का जितना गहरा बोध है उतना शायद ही किसी को हो-स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'भारत-भारती' (भविष्यत् खंड) की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

3. 'पथिक' कविता के आधार पर रामनरेश त्रिपाठी की जीवन-दृष्टि का परिचय दीजिए। (15)

अथवा

'पेशोला की प्रतिध्वनि' कविता का प्रतिपाद्य लिखिए।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

4. पठित कविताओं के आधार पर निराला के काव्य का मुख्य स्वर स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'द्रुत झरो जगत के जीर्ण पत्र' कविता का उद्देश्य अपने शब्दों में लिखिए।

5. महादेवी वर्मा के काव्य-वैशिष्ट्य रेखांकित कीजिए। (15)

अथवा

'ठुकरा दो या प्यार करो' कविता का काव्य-सौंदर्य लिखिए।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 5218 **H**

Unique Paper Code : 2052102403

Name of the Paper : Hindi Upanyas

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – DSC**

Semester : IV

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. हिंदी उपन्यास के उदभव पर प्रकाश डालते हुए प्रेमचंद युगीन उपन्यासों की विशेषताएँ बताइए। (15)

अथवा

हिन्दी उपन्यास के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

P.T.O.

2. मुंशी प्रेमचंद अथवा मन्नू भंडारी के साहित्यिक योगदान पर प्रकाश डालिए। (15)

3. कर्मभूमि उपन्यास में चित्रित समस्याओं का वर्णन कीजिए। (15)

अथवा

'कर्मभूमि उपन्यास स्वतंत्रता आंदोलन का दस्तावेज है'–इस कथन के आलोक में अमरकांत का चरित्र–चित्रण कीजिए।

4. रागदरबारी उपन्यास में निहित व्यंग्यात्मक यथार्थ को स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

रागदरबारी उपन्यास के शीर्षक पर प्रकाश डालते हुए रूप्पन बाबू का चरित्र–चित्रण कीजिए।

5. निम्नलिखित में से किसी **एक** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (12)

(क) "शान्तिकुमार ने आवेश से कहा–'कहीं नहीं। शास्त्र में यह लिखा है कि घी में चरबी मिलाकर बेचो, टेनी मारो, रिश्वतें खाओ, आँखों में धूल झोंको और जो तुमसे बलवान हैं, उनके चरण धो–धोकर पियो, चाहे वह शास्त्र को पैरों से ठुकराते हों।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

तुम्हारे शास्त्र में यह लिखा है, तो यह करो। हमारे शास्त्र में तो यह लिखा है कि भगवान् की दृष्टि में न कोई छोटा है, न बड़ा, न कोई शुद्ध और न कोई अशुद्ध। उसकी गोद सबके लिए खुली हुई है।"

(ख) अंग्रेजों के ज़माने में वे अंग्रेजों के लिए श्रद्धा दिखाते थे। देसी हुकूमत के दिनों में वे देसी हाकिमों के लिए श्रद्धा दिखाने लगे। वे देश के पुराने सेवक थे। पिछले महायुद्ध के दिनों में, जब देश को जापान से ख़तरा पैदा हो गया था, उन्होंने सुदूर-पूर्व में लड़ने के लिए बहुत से सिपाही भरती कराए। अब जरूरत पड़ने पर रातोंरात वे अपने राजनीतिक गुट में सैकड़ों सदस्य भरती करा देते थे। पहले भी वे जनता की सेवा जज की इजलास में जूरी और असेसर बनकर, दीवानी के मुकदमों में जायदादों के सिपुर्ददार होकर और गाँव के जमींदारों में लम्बरदार के रूप में करते थे। अब वे कोऑपरेटिव यूनियन के मैनेजिंग डायरेक्टर और कॉलिज के मैनेजर थे। वास्तव में वे इन पदों पर काम नहीं करना चाहते थे क्योंकि उन्हें पदों का लालच न था। पर उस क्षेत्र में जिम्मेदारी के इन कामों को निभानेवाला कोई आदमी ही न था और वहाँ जितने नवयुवक थे, वे पूरे देश के नवयुवकों की तरह निकम्मे थे। इसीलिए उन्हें बुढ़ापे में इन पदों को सँभालना पड़ा था।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

6. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए।

(9×2=18)

(i) उपन्यास के तत्व।

(ii) कर्मभूमि उपन्यास के आधार पर सुखदा का चरित्र - चित्रण।

(iii) उपन्यासकार फजीश्वरनाथ रेणु

(iv) रागदरबारी उपन्यास में ग्रामीण जीवन।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

[This question paper contains 4 printed pages.]

आपका अनुक्रमांक.....

Sr. No. of Question Paper : 1519 **H**

Unique Paper Code : 12057607

Name of the Paper : Lok Natya लोकनाट्य (DSE) (CORE)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) परदेसी का सोचे मरलीं।
अन-पानी के स्वाद रुचत नइखें, कबहूँ पेट ना भरलीं।
मतलब मोर बिधाता जनिहन, प्रेम का फंदा में परलीं।
छठ, एतवार एको न छोड़लीं, बरत से काया के जरलीं।
कहत 'भिखारी' उपाय नइखे लउकत, कोटिन जतन क के हरलीं।

अथवा

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

पिया मोर, मति जा हो पुरुबवा।
पुरुब देस में टोना बेसी बा, पानी बहुत कमजोर। पिया मोर...
सुनत बानी आँख पानी देत बा, सारी भइल सरबोर। पिया मोर...
एक नाथ बिनु मन अनाथ रही, घुसी महल में चोर। पिया मोर...
कहत बिखारी हमारी ओर देख, कतिना करीं निहोर? पिया मोर...

(ख) रंग भर जाजम झटक बीछावां, चारी पल्ला खोल।।टेक।।
सिद्धेश्वर हे सरण-चरण में, लिखे माच का बोल।
ग्यान की गादी ओर गलीचा, तकीया गोल मटोल।
तन का ताना मन का बाना, स्वांसा तार टटोल।
बृहम्म नाम की जाजम बूणी रंगी धरम रंग घोल।
मन पंछी जां बास करे हे, करके बचन ओर कोल।
इन जाजम पे बीरला बेठे, ग्यान तराजू तोल।।

अथवा

भरतरी -
अरे पिंगला थारो सुन्दर रूप सरूप नैन भर निरखांवो।।टेक।।
थारो मुख सूरज सो तेज, रंग केसर का वो
थारो रूप देख सरमाय चाँद अम्बर का वो।
पिंगला -
अजी पीतम तम हो सरद पुनम का चाँद में हां चाँदनी।।टेक।।
तम जेसे गजराज, में हां गज गामनी
तम म्हारा भरतार, पियु मैं थाकी कामनी।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

(ग) इस बणखण्ड में दीखै सै मनैं दिन मैं घोर अन्धेरा।
सारदूल के जंगल के राजा कितै पति मिल्या हो मेरा।
तेरे बिना ना मेरी दहशत भागै, पिया मेरे इस मौकै मत त्यागै।
मनैं पिता के घरपै देवत्यां आगे पल्ला पकड्या तेरा।
इस जीवते जी क्यूंकर भूलूँ जब उनकै आगै टैरा ।।।।।

अथवा

समझ ना सकते जगत के मन पै अज्ञान रूपी मल होग्या।
बेईमान मैं मग्न रहै सैं गांठ-गांठ मैं छल होग्या ।टेक।।
भाई के धोरै मा जाया भाई चाहता बैठणा पास नहीं ।।
जै बीर न पति कमा कै ल्यादे तै पेट भरण की आस नहीं ।।
मात-पिता गुरु-शिष्य सुत नै कहैं मेरे चरण का दास नहीं ।।
मित्र बण कै दगा कमाज्यां नौकर का विश्वास नहीं ।।
जब तै गारत महाभारत मैं अठारा अक्षौहिणी दल होग्या ।।।।।

(10×3=30)

2. लोकनाट्य 'नौटंकी' के उद्भव और विकास को रेखांकित कीजिए।

अथवा

'अंकिया' लोकनाट्य का स्वरूप स्पष्ट करते हुए उसकी परंपरा का उल्लेख कीजिए। (15)

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

3. लखमीचंद कृत 'नल दमयन्ती' सांग की कथावस्तु का सार अपने शब्दों में लिखिए।

अथवा

'नल-दमयन्ती' सांग के आधार पर दमयन्ती की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए। (10)

4. मिंखारी ठाकुर कृत 'बिदेसिया' की संवेदना स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'बिदेसिया' के प्रमुख पात्रों का संक्षिप्त परिचय दीजिए। (10)

5. 'राजयोगी भरथरी' माच के नाट्य-शिल्प का विवेचन कीजिए।

अथवा

'राजयोगी भरथरी' माच के आधार पर राजा भरथरी का चरित्र-चित्रण कीजिए। (10)

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 1520 **H**

Unique Paper Code : 12057608

Name of the Paper : हिन्दी की भाषिक विविधताएँ (DSE)

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi**

Semester : VI

समय : 3 घण्टे पूर्णांक :75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. हिन्दी सिनेमा की भाषाई विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

वाचिक हिन्दी के क्षेत्रीय रूपों (बिहारी और बंबइया हिन्दी) का वर्णन कीजिए।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

P.T.O.

2. अमीर खुसरो हिन्दी के प्रथम जनकवि हैं - स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

कबीर का हिन्दी साहित्य मे महत्वपूर्ण स्थान है, विवेचना कीजिए।

3. किन कारणों से हम बनारसीदास कृत 'अर्ध कथानक' को हिन्दी की पहली आत्मकथा मानते हैं? (15)

अथवा

गालिब की शायरी तत्कालीन समाज का चेहरा उजागर करती है, स्पष्ट कीजिए।

4. 'पंचलैट' कहानी का सार लिखकर प्रतिपाद्य लिखिए। (15)

अथवा

'रानी केतकी की कहानी' का मूल प्रतिपाद्य क्या है, विस्तार से लिखें।

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिये : (8+7=15)

(अ) ये हम जो हिज् में दीवारो-दर को देखते हैं
कभी सबा को कभी नामा बर को देखते हैं
वो आए घर में हमारे, खुदा की कुदरत है

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

कभी हम उनको कभी अपने घर को देखते हैं
नजर लगे न कहीं उसके दस्तओ-बाजू को
ये लोग क्यों मेरे ज़ख्मे-जिगर को देखते हैं
तेरे जवाहिरे-तरफे-कुलह को क्या देखें
हम औजे-तालअ-ए-लालो-गुहर को देखते हैं

अथवा

ऐ मैं जोरी धरे थे दाम। आज आए तुम्हरे काम
साहिब चिंत न कीज कोई। पुरुष जिए तो सब कुछ होइ
यह कहि नारि गई मा पास। गुप्त बात कीनी परगास
माता काहू साँ जिनि कहाँ। निज पुत्री की लज्जा बहौ

(ब) "गोधन ने सबका दिल जीत लिया। मुनारी ने हसरत-भरी निगाह से गोधन की ओर देखा। आँखें चार हुईं और आँखों-ही-आँखों में बातें हुईं- कहा- 'सुना माफ़ करना! मेरा क्या कसूर!' सरदार ने गोधन को बहुत प्यार से पास बुलाकर कहा, "तुमने जाति की इज्ज़त रखी है। तुम्हारा सात ख़ून माफ़। खूब गाओ सलीमा का गाना।" गुलरी काकी बोली, "आज रात मेरे घर में खाना गोधन!"

अथवा

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

"यह सुनते ही कूँवर उदैभान के माँ-बाप दोनों दौड़े आए। गले लगाया, मुँह चूमा पाँव पर बेटे के गिर पड़े, हाथ जोड़े और कहा "जो अपने जी की बात है, सो कहते क्यों नहीं, क्या दुखड़ा है जो पड़े पड़े कराहते हो? राजपाट जिसको चाहो दे डालो, कहो तो क्या चाहते हो? तुम्हारा जी क्यों नहीं लगता? भला वह क्या है जो हो नहीं सकता? मुंह से बोलो, जी को खोलो। जो कुछ कहने से सोच करते हो, अभी लिख भेजो। जो भी लिखोगे ज्यों की त्यों करने में आएगी।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 1672 **H**

Unique Paper Code : 12057611

Name of the Paper : अवधारणात्मक साहित्यिक

Name of the Course : **B.A. (HONS.) HINDI - DSE**

Semester : VI

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. अलंकार की अवधारणा पर विचार करते हुए वक्रोक्ति अलंकार को स्पष्ट कीजिए । (12)

अथवा

काव्य में छंद की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए मात्रिक और वर्णिक छंदों का सामान्य परिचय दीजिए ।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

P.T.O.

2. भारतीय काव्य चिंतन में वर्णित काव्य लक्षण विषय पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

खंडकाव्य का स्वरूप स्पष्ट करते हुए उसकी विशेषताएँ लिखिए।

3. शास्त्रवाद से आप क्या समझते हैं? उदाहरण सहित लिखिए। (12)

अथवा

संरचनावाद और उत्तर-संरचनावाद की प्रमुख स्थापनाओं का वर्णन कीजिए।

4. निबंध विधा के तत्त्वों का विवेचन कीजिए। (12)

अथवा

त्रासदी की परिभाषा बताते हुए त्रासदी सिद्धांत का विवेचन कीजिए।

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए। (9×3=27)

(क) मानववाद

(ख) अभिधा शब्द शक्ति

(ग) बिंब

(घ) कहानी

(ङ) विरेचन

(च) गीतिकाव्य

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 1673 **H**

Unique Paper Code : 12057612

Name of the Paper : Hindi Rangmanch (DSE)

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. प्राचीन भारतीय प्रदर्शन परम्परा का विवेचन कीजिए। (15)

अथवा

पारंपरिक रंगमंच की रामलीला और रासलीला शैलियों की विशेषताएँ लिखिए।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

P.T.O.

2. स्वतन्त्रतापूर्व हिन्दी रंगमंच के विकास में भारतेन्दुयुगीन रंगमंच का अवदान रेखांकित कीजिए। (15)

अथवा

भारतेन्दु नाट्य अकादमी, लखनऊ के महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

3. आधुनिक हिंदी रंगमंच की यथार्थवादी शैली अथवा लोक शैली का उदाहरण सहित परिचय दीजिए। (15)

4. राधेश्याम कथावाचक अथवा इब्राहिम अल्काजी के रंग व्यक्तित्व एवं रंगदृष्टि का मूल्यांकन कीजिए। (15)

5. निम्न में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए। (8,7)

(क) पारसी थियेटर

(ख) बिदेसिया

(ग) माधवप्रसाद शुक्ल युगीन रंगमंच

(घ) राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 2323 **H**

Unique Paper Code : 62051202

Name of the Paper : Hindi A

Name of the Course : **BA Programme Hindi – CBCS**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न–पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×3=30)

(क) जैसी मुष तें नीकसै, तैसी चालै नाहिं ।
मानिष नहीं ते स्वान गति, बाँध्या जमपुर जाँहिं ।।
पद गाए मन हरषियाँ, साखी कह्याँ अनंद ।
सों तत नाँव न जाँणियाँ, गल मैं पड़िया फंध ।।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

P.T.O.

अथवा

बाने फहराने घहराने घंटा गजन के,
नाहीं ठहराने राव राने देस-देस के।
नग भहराने ग्राम नगर पराने सुनि,
बाजत निशने सिवराज जू नरेस के।
हाथिन के हौदा उकसाने, कुम्भ कुंजर के,
भौन को भजाने अलि छूटे लट केस के।
दल को दरारेन ते कमठ करारे फूटे,
कर के से पात बिहराने फन सेस के।

(ख) जोग-जुगति सिखए सबै मनौ महामुनि मैन।
चाहत पिय अद्वैतता काननु सेवत नैन।।
कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन मैं करत हैं, नैननु ही सब बात।।

अथवा

असंख्य कीर्ति-रश्मियां विकीर्ण दिव्य दाह-सी
सपूत मातृभूमि के - रुको न शूर साहसी!
अराति सैन्य सिंधु में, सुबाड़वाग्नि से जलो,
प्रवीर हो जयी बनो - बढ़े चलो, बढ़े चलो।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

(ग) दुर्गम बर्फानी घाटी में, शतसहस्र फुट ऊँचाई पर-
अलख नाभि से उठने वाले, निज के ही उन्मादक परिमल-
के पीछे धावित होहोकर-, तरलतरुण कस्तूरी मृग को-
अपने पर चिढ़ते देखा है। बादल को घिरते देखा है।

अथवा

अनुभव से समृद्ध होने की बात तुम मत करो
वह तो सिर्फ अद्वितीय जन ही हो सकते हैं
अद्वितीय यानी जो मस्ती में रहते हैं चार पहर
केवल कभी चौंककर
अपने कुएँ में से झाँक लिया करते हैं
वह कुआँ जिसको हम लोग बुर्ज़ कहते हैं

2. संपर्क भाषा से आप क्या समझते हैं? हिन्दी के राष्ट्रभाषा और राजभाषा के रूप को स्पष्ट कीजिए। (10)

अथवा

भक्तिकाल की प्रवृत्तियों का सामान्य परिचय दीजिए।

3. कबीर के काव्य में विद्रोही स्वर की पहचान कीजिए। (10)

अथवा

पठित रचनाओं के आधार पर बिहारी के काव्य सौष्ठव को समझाइए।

P.T.O.

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

4. जयशंकर प्रसाद की कविता में राष्ट्रीय चेतना का चित्रण कीजिए। (10)

अथवा

नागार्जुन की कविता 'बादल को घिरते देखा है' का भाव सौन्दर्य बताइए।

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (5×3=15)

(क) आधुनिक भारतीय भाषाएं

(ख) आदिकाल के प्रमुख कवि

(ग) रीतिकाल के कवि

(घ) आधुनिक काल का उद्‌भव और नवजागरण

(ङ) रघुवीर सहाय का महत्त्व

(च) प्रगतिवाद

(छ) हिन्दी नाटक

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY